ईश्वरीय कारोबार में आदर्श व्यवस्था संपन्न करने की ज़रूरत – 3

● ब्रह्माकुमार रमेश शाह, मुंबई (गामदेवी)

पिछले दो लेखों से हम आदर्श एवं सुचारु राज्यव्यवस्था के बारे में विचार कर रहे हैं, उसी संदर्भ में आज यह तीसरा लेख लिख रहा हूँ। आदर्श व्यवस्था को समझने के लिए इतिहास को समझना जरूरी है और इसमें यज्ञ के छपे हुए कल्पवृक्ष तथा गोले के चित्र बहुत मददगार बन सकते हैं क्योंकि इन चित्रों में पाँच हजार वर्ष का इतिहास संक्षिप्त रूप में दिया गया है। इतिहास के बारे में कुछ बातें समझने की ज़रूरत है क्योंकि इतिहास व ड्रामा एक भी गलती को माफ नहीं करते हैं।

मिसाल के तौर पर, शास्त्रों में लिखा है कि कुम्भकर्ण ने छोटी-सी गलती की और इन्द्रासन के बजाय निद्रासन मांग लिया। राजा दशरथ ने युद्ध के मैदान में रानी कैकेयी को दो वरदान दिये। ये दोनों गलतियाँ नहीं होतीं तो रामायण कुछ और ही प्रकार से होती। इसी प्रकार महाभारत में भी राजा द्रुपद के दरबार में द्रौपदी के स्वयंवर के समय कर्ण जब मत्स्यभेदन करने खड़ा हुआ तब यदि राजमाता कुंती ने कह दिया होता कि कर्ण सूतपुत्र नहीं परंतु सूर्यपुत्र है और वह मेरा पुत्र है या हस्तिनापुर के महल में द्रौपदी ने ये शब्द नहीं कहे होते कि अंधे का पुत्र अंधा, तो महाभारत का स्वरूप भी दूसरा ही होता और इतिहास भी कुछ अलग ही होता।

इसी प्रकार से यूरोप के इतिहास में वर्णित है कि नेपोलियन ने वाटरलू के युद्ध के मैदान में यह समझा कि ऑस्ट्रिया की सेना अब तक युद्ध के मैदान में नहीं आई है इसलिए उसने अपनी 1/3 सेना को पूर्व में भेज दिया, उसने अगर यह गलती ना की होती तो वाटरलू के युद्ध का परिणाम कुछ और ही होता। ऐसे ही द्वितीय विश्वयुद्ध में हिटलर ने रशिया के साथ युद्ध करने की गलती नहीं की होती तो परिणाम कुछ और ही होता।

इन सब बातों के आधार पर सिद्ध होता है कि राज्यव्यवस्था में छोटी सी भी गलती आगे जाकर बहुत बड़ी भूल साबित होती है और उसके कारण राज्यव्यवस्था के कारोबार में बहुत बदलाव होता है इसलिए बाबा ने सतयुगी दैवी राज्य कारोबार के बारे में यही कहा है कि वहाँ देवतायें 16 कला सम्पूर्ण होंगे। देवताओं के राज्य कारोबार में कोई भी प्रकार की छोटी-बड़ी गलती नहीं होगी।

राज्य व्यवस्था में अनुशासन के बारे में भी बहुत ही ध्यान रखना पड़ता है। अनुशासन की कोई भी गलती होने से इतिहास बदल जाता है। उदाहरण के लिए, ब्रिटिश साम्राज्य का कारोबार बहुत ही व्यापक था और यह कहा जाता था कि ब्रिटिश साम्राज्य पर सूर्य कभी अस्त नहीं होता है क्योंकि उन्होंने दुनिया के अधिकतर देशों पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया था और उसे चलाने के लिए बहुत अच्छी तरह से व्यवस्था की थी। जैसे कि इंग्लैण्ड में दोपहर 12 बजे पार्लियामेन्ट शुरू होती थी तो भारत में शाम के 5.30 बजे वित्तमंत्री बजट पेश करता था अर्थात् ब्रिटिश पद्धति के अनुसार ही उन्होंने सभी देशों में अपना राज्यकारोबार किया। उन्होंने अपने आधिपत्य के सभी देशों में निमित्त शासन करने के लिए वायसरॉय को नियुक्त किया और उनका कार्यकाल पाँच वर्ष से अधिक नहीं रखा। उस समय हवाई जहाज आदि नहीं थे और समुद्र के द्वारा अफ्रीका से घूमकर भारत आना होता था जिसमें काफी समय लग जाता था फिर भी उन्होंने किसी भी वायसरॉय को पाँच वर्ष से अधिक एक देश में नहीं रखा वह चाहे भारत हो या कैनेडा, ऑस्ट्रेलिया या अन्य कोई भी देश हो क्योंकि उन्हें डर था कि अगर कोई भी वायसरॉय ज्यादा समय एक देश या एक स्थान पर रहेगा तो उसकी जड़ें मजबूत हो जायेंगी और फिर वह वहां का राजा

बन जायेगा और परिणामस्वरूप ब्रिटिश साम्राज्य नष्ट हो जायेगा। ब्रिटिश राज्य कारोबार की पद्धति समझने और सीखने जैसी है।

भारत में मराठा साम्राज्य की राजधानी पुणे थी परन्तु उन्होंने वडोदरा में गायकवाड, इन्दौर में होल्कर और ग्वालियर में सिंधिया को सूबेदार के रूप में नियुक्त किया था। इन तीनों स्थानों पर जिनको नियुक्त किया था उनकी जड़ें वहाँ मजबूत हो गईं और वे वहां के राजा बन गये, साथ-साथ वहां पर वंश परंपरा भी स्थापित हो गई परिणामस्वरूप मराठा साम्राज्य को बहुत क्षति हुई और वह बिखर गया। पुणे के पेशवा अगर सोच-समझकर सूबेदार रखते और सत्ता अपने हाथ में रखते तो उनका कारोबार बहुत ही स्थिर रूप में होता और मराठा साम्राज्य का इतिहास कुछ और ही होता। अंग्रेजों ने विभिन्न देशों में राज्य कारोबार किया परन्तु इंग्लैण्ड में उनकी सत्ता मजबूत थी। चुनाव भी होते रहे, पार्टियाँ भी बदलती रहीं परंतु फिर भी उन्होंने राज्य की कमान सच्चाई और ईमानदारी से सम्भाली। विभिन्न स्थानों पर आजादी प्राप्त करने के लिए अनेक विप्लव भी हुए, जैसे भारत में 1857 का स्वतंत्रता संग्राम हुआ परंतु इन सब बातों का सामना उन्होंने किया और फलस्वरूप उनकी सत्ता सदा ही मज़बूत रही।

उपरोक्त लिखी हुई बातों से एक बात सिद्ध होती है कि जो भी राज्यव्यवस्था के निमित्त बनते हैं उन्हें अपने साथी और साधनों की कुशल व्यवस्था करनी चाहिए और इसी व्यवस्था को किताबों में कहा गया है रिसोर्स मैनेजमेन्ट (Resource Management) अर्थात् अपने साथियों और साधनों का 100 प्रतिशत सम्पूर्ण (perfect) रूप में प्रबंधन करना। अगर साधनों के संचालन में, उपयोग में, उनकी व्यवस्था में थोड़ी भी भूलें हुईं तो उनके आधार पर राज्यव्यवस्था करने वालों पर बदनामी का टीका लग सकता है। जैसे कि भारत की वर्तमान राज्यव्यवस्था में देखते हैं कि राज्यकारोबारी साधनों का सुचारु रूप से उपयोग नहीं करते और योग्य कार्य के लिए योग्य व्यक्तियों को नियुक्त नहीं करते जिस कारण साधनों के वितरण (Distribution) में फर्क पड़ रहा है। भ्रष्टाचार आदि के कारण राज्य कारोबार अच्छी रीति नहीं होता और अच्छे व्यक्तियों की नियुक्ति अच्छे स्थानों पर नहीं होती।

लोकतंत्र के बारे में जिन भी बड़े-बड़े लोगों ने अपने विचार व्यक्त किये उनमें से एक प्रो. डायसी ने अपनी किताब में लिखा है कि Democracy rarely permit a country to be governed by its ablest man. अर्थात् लोकतंत्र में जो राज्यव्यवस्था है उसमें अच्छे एवं श्रेष्ठ व्यक्तियों को कारोबार में अग्रिम स्थान नहीं मिलता। उन्होंने यह भी लिखा है कि लोकतंत्र में बाहुबल और धनबल का कारोबार होता है। जो श्रेष्ठ व्यक्ति हैं वे बाहुबल और धनबल के लालच में नहीं आते हैं जिस कारण गुंडागर्दी या हिंसक व्यवहार करने वाले राज्यव्यवस्था के कारोबार में आ जाते हैं परिणामस्वरूप राज्यव्यवस्था दूषित हो जाती है और कभी-कभी लोकतंत्र के बदले वोटतंत्र (Vote Power) ही स्थान लेता है जिसके लिए कहा गया है कि 'जिसकी लाठी उसकी भैंस'। इस प्रकार योग्य व्यक्ति आगे नहीं आते और इस कारण राज्यव्यवस्था भी योग्य रीति से नहीं होती।

दूसरी बात यह भी है कि वंश परंपरा के आधार पर जब यह कारोबार होता है तो कभी-कभी अच्छे व्यक्ति राज्यकारोबार में आगे नहीं आ सकते। इन बातों के आधार पर बापदादा के यज्ञ का कारोबार हम देखें तो बाबा ने अपने साथियों को योग्य बनाया और इसलिए ही 1937 से 1950 तक अर्थात् भारत आने तक सबको ज्ञान, योग और धारणा की पूरी शिक्षा दी और इन परीक्षाओं में जब सब उत्तीर्ण हुए तब ही बाबा ने उन्हें सेवा के लिए भेजा।

बाबा के सामने भी वंश परंपरा का प्रश्न हो सकता था जैसे कि ब्रह्मा बाबा

की लौकिक पुत्री दादी निर्मलशांता जी तथा पुत्रवधू दादी बृजइन्द्रा जी बहुत ही होशियार एवं व्यवस्था के कार्य में निपुण थे परंतु 1965 में जब मातेश्वरी जी अव्यक्त हुए तब बाबा ने दिनांक 1-4-1966 की साकार मुरली में खुद अपने हाथों से लिखा कि दादी प्रकाशमणि जी एवं दीदी मनमोहिनी जी की, मुख्य संचालिका तथा सह मुख्य संचालिका के रूप में नियुक्ति की गई है अर्थात् सर्वश्रेष्ठ व्यक्तियों के द्वारा ही सर्वश्रेष्ठ कार्य हो सकता है यह बात सिद्ध कर दिखायी। ब्रह्मा बाबा ने दोनों दीदी-दादी को भी समय-प्रति-समय यज्ञ संचालन की बातों से अवगत कराकर यज्ञ संचालन के लिए सौ प्रतिशत सम्पन्न बनाया और उनके प्रशासन का परिणाम हम सभी ने देखा कि कैसे दीदी मनमोहिनी और दादी प्रकाशमणि के समय यज्ञ का विस्तार त्वरित गति से हुआ।

जब ज्ञान सरोवर और शान्तिवन की स्थापना और रचना हो रही थी तो दादी प्रकाशमणि जी स्वयं जाकर खड़े रहते थे तथा कुशल व्यवस्थापन के लिए पूर्ण दिशानिर्देश देते थे कि कौन-कौन से विभाग बनाने हैं, कौन कहाँ बैठेगा, कैसे कारोबार करेगा और फिर सब बातों का निर्णय कर योग्य व्यक्तियों के हाथ में कारोबार सौंप दिया। साथ ही साथ समय-प्रति-समय उन्हें मार्गदर्शन देना, उनके साथ लेन-देन करना, इस प्रकार यज्ञ का संचालन बहुत ही सुचारु एवं श्रेष्ठ रीति से किया। उनके इस कुशल व्यवस्थापन की स्वयं अव्यक्त बापदादा ने भी सराहना की।

सुचारु व्यवस्था के लिए साधनों के व्यय के बारे में भी अगर ध्यान नहीं दिया तो भी बहुत नुकसान हो सकता है। उदाहरणत: ब्रह्मा बाबा एक बार मुम्बई में थे तब उन्हें मधुबन से पत्र आया कि बाबा, बारिश का मौसम शुरू होगा तो यहां जो मजदूर काम करते हैं उन्हों के लिए कुछ छातों की जरूरत है। तो बाबा ने मुझे कहा कि मैं कल सुबह क्लास में बच्चों की परीक्षा लूँगा और देखूंगा कि खरीद करने की समझ कौन-से बच्चे में कितनी है। दूसरे दिन बाबा ने क्लास में सभी से कहा कि बच्चो, मधुबन में कामगारों के लिए छातों की ज़रूरत है तो आप सभी 1-1 छाता सैम्पल के रूप में लेकर आना। मुरली के बाद मैंने बाबा से कहा कि बाबा, कल तो आपके पास 125-150 छाते आ जायेंगे तो बाबा ने मुझे कहा कि बच्चे, आप नहीं जानते हो मेरे बच्चों को, मैं ही जानता हूँ। दूसरे दिन हमने देखा कि क्लास के सिर्फ 8 भाई-बहनें ही छाता लाये थे। बाबा ने देखा कि एक भाई 175 रुपये का सुन्दर फैन्सी छाता लाया था। बाबा ने उससे कहा कि बच्चे, इतना महंगा छाता क्यों लाये तो उस भाई ने कहा कि बाबा, आपने कहा था ना, इसलिए। एक व्यक्ति के सिवाए सभी फैन्सी छाते ही लाये थे। केवल एक भाई 8 रुपये का, लकड़ी के हैण्डल वाला बड़ा-सा मजबूत छाता लाया था तो बाबा ने उससे पूछा कि बच्चे, आप इतना सस्ता छाता क्यों लाये तो उस भाई ने कहा कि बाबा, मैं यह छाता आपके लिए नहीं, मजदूरों के लिए लाया हूँ। मजदूरों का काम काफी मेहनत वाला होता है और उन्हें ऐसा ही मजबूत और बड़ा छाता चाहिए। साथ-साथ लकड़ी का हैण्डल है जो टूटेगा नहीं, प्लास्टिक का जल्दी ही टूट जायेगा इसलिए यह छाता लाया। बाबा ने कहा कि इस बच्चे में यह समझ है कि किसके लिए कौन-सी और कैसी चीज खरीदनी चाहिए। इसके बाद यज्ञ के लिए मुम्बई से जो भी खरीदारी का कारोबार हुआ वह बाबा ने उस बच्चे के हाथ में दिया। इस प्रकार योग्य व्यक्ति को परखकर बाबा कारोबार उनके हाथ में देते थे।

हम सभी ब्रह्मावत्सों को भी योग्य व्यक्तियों को नियुक्त करने का और साधनों के ऊपर व्यर्थ खर्च न करने का बहुत ध्यान रखना है। जैसे व्यर्थ संकल्प ना हों इसका ध्यान रखते हैं वैसे ही व्यर्थ खर्च भी ना हो इसका भी ध्यान रखना है। यह बात अगर हम अभी सीखेंगे तब ही ईश्वरीय कारोबार में आदर्श व्यवस्था सम्पन्न सुचारु रूप से कार्य कर सकेंगे।

❖